International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 06-11

'पठार पर कोहरा' का कथा–विन्यास

डॉ0 उत्तम पटेल

एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला–वलसाड, गुजरात, भारत।

सारांश

'पठार पर कोहरा' राकेश कुमार सिंह का झारखण्ड के मुंडा आदिवासियों के शोषण व जनचेतना पर आधारित एक उपन्यास है। उपन्यासकार ने "शुरू करने से पहले" (प्रस्तावना) में इस उपन्यास के बारे में उचित ही लिखा है कि "भारतीय बुद्धिजीवी समाज के जिन लेखकों ने आदिवासी जनजीवन पर लिखा है उनमें से अधिकांश ने हर एक गैर–आदिवासी को खलनायक के रूप में ही चित्रित करने की रूढ़ि का अनुगमन किया है। इस रूढ़िवादी लेखन ने आदिवासी क्षेत्रों के बाहर हर गैर–आदिवासी को "दीकू" (डाकूधदिक्कत करने वाला बाहरी घुसपैठिया) के रूप में स्थापित कर एकरस, एकतरफा और एकांगी सोच को विकसित किया है जबकि नये परिप्रेक्ष्य में इस सम्बन्ध को पुनः परिभाषित करने तथा आदिवासी–गैर–आदिवासी के बीच की आदिम खाई को पाटने की फौरी आवश्यकता है। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से मैंने एक प्रयास किया है।"

मूलशब्दः मुंडा आदिवासी, संजीव, दीकू, शोषण, जनचेतना।

प्रस्तावना

'पठार पर कोहरा' राकेश कुमार सिंह का झारखण्ड के मुंडा आदिवासियों के शोषण व जनचेतना पर आधारित एक उपन्यास है। इसका कथाक्षेत्र है पलामू का गजलीठोरी। जो छोटानागरपुर का पठार क्षेत्र है।

यह उपन्यास पाँच खण्डों में विभाजित है। पहला खण्ड है–'जंगल यहाँ से शुरू होता है'। इसमें कथानायक संजीव की बरकाकाना से गजलीठोरी, रंगेनी के घर पहुँचने की कथा वर्णित है। संजीव और रंगेनी की कथा इसमें साथ–साथ बहती है। दूसरा खण्ड है– 'ठहरिये, आगे जंगल है।' में संजीव के गजलीठोरी रंगेनी के घर आसरा मिलने से लेकर बनासकाँठा से लौटते हुए भालू के हमले से घायल होने और फादर ब्रूनो के –".याद रखो संजीव, यदि तुम्हें इन्द्रधनुष चाहिए तो पहले मूसलाधार बारिश भी सहनी ही होगी।" [1] – संदेश के साथ समाप्त होता है। तीसरा खण्ड है–'कोहरे में अकेले।' चौथे खण्ड का नाम है–'कोहरे के विरुद्ध' और पाँचवा और अंतिम खण्ड है–'यह अंत नहीं।'

गजलीठोरी में नया मास्टर आ रहा है। गाँव का साहू सभी को चेता रहा है–"कौमनिस्ट जो यहाँ आनेवाला है न, वही होगा यहाँ का नया मास्टर।"[2] वह है संजीव सान्याल। वह राँची के एक उपनगर तुपुदाना में प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक था। वहीं पर रहता था राखालदास चौधरी के मकान में। शिक्षक के रूप में नौकरी करनेवाले संजीव शिक्षादृक्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार, शोषण व गंदगी को खत्म करने के लिए उसका भण्डाफोड करते हैं और जिला शिक्षा अधिकारी निरंजन दास को रिश्वत लेते हुए रँगे हाथ वह गिरफ्तार करवाता है। निरंजन दास गिरफ्तारी के बाद नौकरी से मुअत्तल होते हैं और उन्हें तीन वर्ष की साधारण कैद की सजा होती है। किन्तु शिक्षा के भ्रष्ट सरकारी तंत्र से टकराने और शिक्षा के कर्णधारों का सामाज्य हिला देनेवाले सिरफिरे शिक्षक संजीव की अक्ल ठिकाने लगाने के लिए उसका तबादला गजलीठोरी कर दिया जाता है। उपन्यासकार के शब्दों में– "संजीव जिनकी आँख की किरकिरी थे, जिनके कलेजे में चुभा काँटा थे, जिनके लिए वे खतरनाक व्यक्ति साबित होते, उन्होंने संजीव को शहर से बहुत दूर. गहरे जंगल में तड़ीपार कर दिया था।" [3]

वहाँ जंगल में लगभग दो साल तक कार्यरत रहने के बाद संजीव को अचानक सरप्लस शिक्षक के रूप में 'स्पीड' परियोजना के लिए योग्य पाकर उनका नाम स्पीड परियोजना हेतु आमंत्रित सुयोग्य और कर्मठ शिक्षकों की सूची में डाल दिया जाता है। और शहर के निकट पदस्थापित संजीव को उठाकर गजलीठोरी के वनप्रांतर में फेंक दिया जाता है। और झरना चौधरी जिस संजीव से प्यार करती है वह उससे कहता है–".ब्याह–शादी के लिए नहीं बना मैं। मैं तो हर आदमी के साथ होना चाहता हूँ, पर चल पाता हूँ कुछ ही दूर तक। कोई दूसरा मुझे पुकारने लगता है सहायता के लिए! तुम झरना हो और मैं शायद कोई नद! बहाव, उद्वेलन और मार्ग–परिवर्तन ही मेरी नियति है शायद! दिशाएँ बदलती रहती हैं मेरी। मेरा रास्ता कुछ अलग है झरना! मेरा ठिकाना कुछ और है। मेरे साथ विवाह करके कोई लड़की दुखी ही होगी। तुम्हें भी तो पति चाहिए–गृहस्थी, बच्चे, चौन और शांति.! पर मेरे भाग्य में तो यात्राएँ लिखी हैं। कैसे सुखी रहोगी मेरे साथ तुम झरना, जबकि भटकन ही मेरा प्रारब्ध है?"[4] और संजीव झरना को छोड़ गजलीठोरी जाने निकल पड़ता है।

उपन्यास का प्रथम खण्ड "बहुत झहरीला होता है कौमनिस्ट दीकू.!" वाक्य से शुरू होता है। गजलीठोरी में नये मास्टर के आने की बात गगनबिहारी साहू फैला रहा है। वह गजलीठोरी के पहान याने प्रधान पुजारी जतरा मुंडा की बेटी रुदिया से कहता है–"बाघ, भालू, गीध, कौए और सियार से भी ज्यादा खतरनाक होता है दीकू, और दीकुओं में भी सबसे जहरीला होता है कौमनिस्ट.!"[5] साहू आनेवाले मास्टर के बारे में सभी से चर्चा करता है। साहू की भयंकर बातें सुनकर तो मुलकी बुढ़िया को लगता है– "जैसे कोई मनुष्य नहीं, अरना भैंसा आनेवाला है गजलीठोरी में।"[6] और वह चेतावनी के रूप में मुलकी से कहता है–"ध्यान रखना हमारी बात मुलकी। नयका मास्टर से होशियार! समझ ले, खूनी बाघ है वह। जो बाघ को छुए, उसे सत्रह घाव और जो कौमनिस्ट को छुए, उसे सत्तर घाव.तीन बीसी के ऊपर दस और.! वह राह–बाट भी पूछे तो कोई मत बतावे। पानी भी माँगे तो कोई पानी न पिलावे.।"[7] और इसके कुछ वाक्यांश भगतिन रंगेनी भी सुन लेती है।

रंगेनी का पति होकाना साहसी जवान था। जो बाबा गउँगा याने बेचू तिवारी की नजर में चढ़ गया था। होकाना बेचू तिवारी की लकड़ियों की टाल में काम करता था। होकाना को महावतगीरी का शौक था। टाल के काम के कारण हाथी भी उसे पहचानते थे। उन हाथियों में एक बिगडैल हाथी था सुरजा। उस सुरजा को भी होकाना ने साध लिया था तो बेचू तिवारी ने खुश होकर होकाना को मजदूरी से हटाकर महावत रख लिया था। बाद में जंगल बाबू ने काम का आदमी मानकर उसे जंगल विभाग में अस्थायी नौकरी पर रख लिया था। उसी समय होकाना ने रंगेनी से ब्याह किया था। रंगेनी ने होकाना से वह सब कुछ पाया था जिसके वह सपने देखती थी। किन्तु होकाना की नौकरी ने ही रंगेनी के घर को आग लगा दी थी। होकाना के परिचित हाथी सुरजा ने ही कामावेग में एक दिन उसे मार डाला था।

इस रंगेनी पर रेल पुलिसवालों ने बलात्कार किया था जब वह सब्जी लेने के लिए बरवाडीह रेल–स्टेशन के पास लगनेवाले हाट में से सब्जी लेकर गाडी से तुपकाडीह जा रही थी कि बीच में गाड़ी का इंजन बिगड़ गया था तब अँधेरे में रेल पुलिसवालों ने उस पर बलात्कार किया था। तब से उसने साग–सब्जी का रोजगार छोड़ दिया था। और उसके बाद गजलीठोरी में आये औघड ने रंगेनी की ईज्जत लूटी थी।

उसके गर्भवती होने पर मुंडा लोगों की पंचायत में उसके पेट के बच्चे के बाप का नाम पूछा गया था–".जिसका बिया तेरे भीतर है, उसका नाम तो बता दे रंगेनी."[8] वह झूठ बोलकर किसी को बचा नहीं रही थी किन्तु दूसरे ब्याह की बात पर वह अड़ गई थी। पहान के पूछने पर वह कहती है–"नई करना तो नई.काहे का? कोई जोर–जबर करावेगा हमारा बियाह?"[9] परिणाम स्वरूप पंचायत फैसला सुनाती है– "आज से रंगेनी का हुक्का–पानी बन्द.!"[10] क्योंकि रंगेनी छिनार हो गई है। फैसले से सारा गाँव एकमत हो जाता है। औरतें भी उससे मुँह फेर लेती हैं। साहू भी सौदा–सामान देना बंद कर देता है। तो रंगेनी भी पंचायत को ठेंगा दिखाकर, पहान के कहे का उल्लंघन कर गाँव से निकल जाती है और गाँव से कुछ दूर हटकर छोटी–सी नयी झोंपड़ी खड़ी कर देती है। तब वह सोचती है–"अपने लिए तो काँस–फूस की झोंपड़ी भी ठीक ही थी, पर जो नया जीव उसके घर में आनेवाला था, उसे झर–बरसात की सिगसिगी (नमी) से बचाकर रखना जरूरी था। जाड़े में थोड़ा गरम घर चाहिए। नये जीव को तेल–पानी.सेक–माँड, जरूरी है और इसके लिए जरूरी था मोटी दीवारोंवाला बढ़िया छप्पर जो हवा–बतास झेल सके। रात–बिरात चूने न लगे।"[11] इसके लिए बाँस चाहिए और बढ़िया बाँस तो बनासकाँठा में ही मिलते हैं अतः चौत की गर्म दुपहरिया में वह बनासकाँठा पहुँचती है। वहाँ की मयगर औरत बकुली बुढ़िया रंगेनी को प्रोत्साहित करते हुए कहती है–"गुन सीख ताकत जुमा हमारी तरह! विद्या सीख। मजबूत बन रे, नई तो."[12] वह आगे कहती है–"नई तो राँड़ औरत की जिनगी साँड के खुर के नीचे दबी घास जैसी हो जाती है। दबेगी, पियराएगी, सूकेगी और अंत में भूसी बनकर उड़ जाएगी।"[13] और दाँतों के बीच जीभ जैसी जीती अकेली औरत रंगेनी बकुली की चेली बनने का प्रण करती है। होकाना के कब्रस्तान से गुजरते हुए वह भी मानो उसे कहता है–"डरना मत रे। ताकत जुमाना। ताकत को ही मान देती है दुनिया। धरती भी। आकाश भी। कोई किसी का लोर–नेटा नहीं पोंछता यहाँ.।"[14] और वह बकुली की गोदी में जा बैठती है। उसके भगतिन हो जाने से साहू और बेचू तिवारी टेढ़ा बोलना छोड़ देते हैं और आसपास के दस गाँव के लोग उसे मानने लगते हैं। सब उससे डरते हैं क्योंकि "आदमीन की दुश्मनी जी का जंजाल, पर भूत–प्रेतों से रार तो जी का काल.!"[15] उसे अपने मान–अपमान की परवाह न थी, वह तो अपने पेट में पलते जीव को आँगन में उतारने के जतन करती रहती है और एक रात सोनारा आ ही जाता है।

रंगेनी का बेटा है सोनारा। माँ होने के बावजूद उसे ये पता नहीं है कि सोनारा किसका बीज है? "रेलवई के उन राकस (राक्षस) सिपाहियों में से किसी का या कि उस दाढ़ीजरौने औघड़वा का जिसने."[16] वह तो सिर्फ यह जानती है कि सोनारा उसकी देह से जनमा है। उसकी देह का एक अंश है सोनारा। क्योंकि "बीया (बीज) किसी का हो, बाजार से खरीदा हुआ या अपने कोठिले से काढ़ा (निकला) हुआ.मोल लिया हुआ या उधार–पैंच का.जमीन तो अपनी ही है। जिस माटी में बुना (बोया) जाता है बीज, अगर वह जमीन अपनी है तो जो उपज को सेवता–पटाता है, पैदावार उसी की कही जाती है। सोनारा भी रंगेनी का बेटा है, बाप चाहे कोई हो।"[17] और इस सोनारा को रंगेनी बाप बनकर भी पालती है और माँ बनकर पोसती है। सोनारा आठ–नव साल का हो गया है।

संजीव बरकाकाना से ट्रेन के सफर से तुपकाडीह स्टेशन उतरता है। तब वहाँ हड्डियों को छेदनेवाली ठण्ड और लगभग अन्धा बना देनेवाला गाढ़ा घना कोहरा है। जहाँ मि.परेरा से उसे वहाँ के विस्तार के बारे में जानकारी मिलती है। और मि. परेरा संजीव को गजलीठोरी जानेवाले रास्ते तक छोड़कर कोहरे में खो जाते हैं। संजीव आगे बढ़ता है तो रास्ते के किनारे की सूचना को पढ़ता है–"ठहरिए.! आगे जंगल है।"[18] पाँच–सात किलोमीटर चलने पर सही मायने में जंगल शुरू होता है–"दायीं ओर कच्ची सड़क से नीचे उतर रही थीं सीढ़ीनुमा क्यारियाँ जिनमें कटे धान के टूँठ दिख रहे थे। कटी फसल की सूचना देते धान के बचे खूँटे.। बायीं ओर दिखने लगी घने वृक्षों की नयनाभिराम हरीतिमा, मानो दिक्–दिगन्त तक फहराती हरियाली की चूनर ओढ़े प्रकृति नये–नये छन्द रच रही थी अरण्य में!"[19] और आरखाँड़ के दिन संजीव छोटानागपुर के पाठर प्रदेश गजलीठोरी पहुँचता है। वहाँ उसकी मुलाकात पंसेरी की दुकान चलानेवाले साहू से होती है जिससे पता चलता है कि यहाँ स्कूल तो सिर्फ कागज पर चलती है। वहाँ के लोग असहयोगी हैं, विद्यालय लापता है और व्यवस्था अँधी है। इस अनजान प्रदेश में संजीव को रात में ठहराने के लिए साहू भी तैयार नहीं है क्योंकि उसे भी जंगलसेना का भय है। वह भी संजीव को तुपकाडीह जाकर रहने के लिए कह निकल जाता है। वह सड़क पार कर गाँव की ओर आगे बढ़ता है कि शायद किसी झोंपड़ी में उनके बराबर जगह निकल आये, किन्तु पनाह पाने की संजीव की उम्मीद टूटती नजर आती है। वह लोगों को पुकारता है किन्तु कोई उत्तर नहीं मिलता। वह तुपकाडीह जाने की सोच ही रहा था कि पूरब में ढलान के नीचे खेतों में खड़ा एक भुतैलादृसा घर दीखता है। वह वहाँ जाकर पुकारता है–"घर में कोई है भाई?"[20] और इसके उत्तर में वह सुनता है–"बकरियन वाली कोठरिया खोल दे सोनारा। कोठरी में खटिया बिछा दे.रात काट लेगा।"[21] दृसुनकर वह निश्चिंत हो जाता है। खाना खाने के बारे में रंगेनी की स्नेहिल झिड़की सुनकर उसे लगता है–"अपरिचित के घोर बियावान के बीच हठात् जैसे ऊसर पठार को फोड़कर उग आया हो अपनत्व का कोई अंकुर.।"[22] और थके संजीव की आँख लग जाती है। उपन्यास का पहला खण्ड यहाँ समाप्त होता है।

संजीव सोनारा से दोस्ती करता है तो दूसरी ओर रंगेनी सोनारा से कहती है–"अब कह दे उससे कि अपने सामान के साथ चला जाए। कोई और ठौर देखे।"[23] किन्तु सुगना–हरमू के झगड़े में संजीव की बातें सुनकर रंगेनी भी कोमनिस संजीव के बारे में सोचती है–"साहू और तिवारी कहते हैं–"शंखचूड़ से भी ज्याजा जहर हैं कोमनिस में, पर अभी जो कुछ बोला कोमनिस, उसमें तो कोई जहर नहीं दिखता! कुछ गलत भी तो नई बोला कोमनिस। होगा खराब आदमी, पर जो आदमी औरतों की मान–मरजाद के लिए सोचे, घर

की मेहरारूओं की इज्जत की फिकिर रखे, वह बहुत खराब आदमी कैसे हो सकता है?"[24]

साहू की अपने बारे में जानकारी देखकर संजीव को आश्चर्य होता है। जंगलसेना ने साहू को जानकारी दी थी। उनके पहुँचने के पहले से ही गजलीठोरी में उनसे संबंधित तमाम सूचनाओं का धमाका हो चुका था। क्योंकि साहू के शब्दों में–"जंगल में हर आने–जानेवाले के जनम–मरण का लेखा रखना पड़ता है मास्टर जी।"[25] और वह संजीव को धमकाते हुए कहता है–"देखो मास्टरजी, गजली में रहना है तो सीधे–सीधे ही रहना.यहाँ कोई जागरण–फागरण नहीं चलेगा। यहाँ तो जंगल का ही नियम चलता है।"[26] और वह ये भी कहता है कि तुम्हें सलामी और लेवी के रूप में हर महीने जंगलसेना को पैसे में भेजने होंगे। किन्तु संजीव स्पष्ट मना कर देता है। बेचू तिवारी द्वारा सलाह के स्वर में यह कहने पर कि "यह वनांचल भी एक आरखाँड ही है और अपना गजलीठोरी.जो इस आरखाँड़ में चलने का मंत्र जान लेता है, उसे कुछ नहीं होता। सुरक्षित पार उतर जाता है जंगल से। आवश्यक समझो तो साहू से यहाँ टिकने का मंत्र तुम भी ले लो।"[27] किन्तु संजीव उन्हें भी स्पष्ट सुना देते हैं–"मुझे हर स्थिति स्वीकार है तिवारी जी, पर मुझे इससे कोई भ्रष्ट मंत्र नहीं लेना।"[28] और दुकान से गुजरते हुए संजीव को साहू आगाह करता है–"भूतखेलौनी के घर में बसे हो न मास्टरजी! किसी रोज रकत–चूसी लाश उठेगी तुम्हारी उस मर्दखोरी के घर से.।"[29] संजीव भी निश्चय कर लेता है कि गजलीठोरी में अपने विद्यालय के अस्तित्व को स्थापित करना ही होगा।

रात के वक्त रंगेनी सोनारा को संजीव की कोठरी में रोटी पहुँचाने के लिए देते हुए फिर से कहती है–"रोटी दे देना और उससे कहना कि हमारे घर में जगह नई है। वह हमारे घर से चला जाए।"[30]

दूसरी ओर संजीव को विद्यालय से संबंधित कागजातों सें अनियमितताओं का पता लगता है। जिसकी सूची तैयार कर वह जिला शिक्षा विभाग और स्पीड के कार्यालय को भेजने की तैयारी में लग जाता है। सोनारा से वह स्नेह संबंध स्थापित करने की कोशिश करता है तो दूसरी ओर सोनारा उससे कहता है–"तुम यहाँ से चले जाना.!"[31] संजीव सोनारा से पूछता है कि मैंने ऐसा क्या कह दिया जो सोनारा मुण्डा मुझे अपने घर से निकालने लगा? किन्तु इसके उत्तर में सोनारा द्वारा यह कहने पर कि "हमें कुछ नई पता, पर तुम हमारे घर से चले जाना संजीदा.माई ने कहा है।"[32] तो संजीव उसे कहता है कि मुझे जैसे ही घर मिल जायेगा, तुम्हारी कोठरी छोड़ दूँगा।

श्यामसुंदर द्वारा सोनारा की मछली छिन लेने पर संजीव द्वारा उसके मन में अधिकार–बोध जगाने का व्यवहार रंगेनी को अच्छा लगता है। क्योंकि "टूअर–टापर लड़का है सोनारा। न कोई हाल पुछनहार मर्द.न कोई लोर पोंछनहार बाप.! सोनारा से भर–मुंङ बतियाता तो है कोमनिस.! स्नेह से अपने पास बिठाता तो है.!"[33] संजीव भी यह जानता है कि साधारण मुनष्य बनकर ही गजलीठोरी के मुण्डा लोगों से वह मेल–जोल बढ़ा सकता है। वह बिरसा मुण्डा की बात करते हुए सोनारा से कहता है–"याद रखो बन्धु, जो लोग अपने बाप–दादा के दुःखों और उलगुलान को भुला देंगे, उन्हें अपने पुरखों से भी ज्यादा दुःख उठाने पडेंगे, और फिर उस दुःख से छूटने के लिए लड़ाइयाँ भी उलगुलान से बड़ी। इसलिए आदमी को अपने दुःखों से लड़कर उसका नाश करना होता है।"[34] तो रंगेनी भी यह सोचने पर मजबूर हो जाती है–".यह कोमनिस तो जो कहता है वह जिन्दगानी की बात कहता है। यह कैसा दीकू आया है इस दफा मास्टर बनकर, जो मुण्डाओं के दुःख से दुःखी होता है।"[35] और यही कारण है कि रंगेनी के साहू के यहाँ सौदा लेने के लिए जाने पर साहू द्वारा धमकाने पर कि "पर सुन, कौमनिस्ट के पेट में दाढ़ी होती है। मीठा माहुर होता है कौमनिस्ट। उसके फेरे में कभी मत पड़ना। जल्दी भगाना उसे अपने घर से, नहीं तो बाबा गउँवाँ और जंगलसेना के बीच पिसाकर सतुआ हो जाएगी। जाँत में मकई की तरह.समझती है न भगतिन?"[36] तो किसी गुणवान की सत्ता को चुनौती देनेवाले या उसकी सामर्थ्य पर ताना कसनेवाले साहू को वह निर्णायक स्वर में कहती है–".मस्टरवा को तो भगाना ही था हमको, लेकिन अब .? अब नई.!.तो जान ले कि अब हम उसको नई भगाएँगे। हमें बुझाता है कि जो आदमीन तेरे जैसे कसाई को बढ़िया नई लग रहा साहू, जरूर उ नीमन (अच्छा) आदमीन होना चाहिए।"[37] रंगेनी के बदलते तेवर देख साहू सोचता है–".घर में जवान राँड और दालान में कौमनिस्ट परदेशी का बँसेड़! ठीक बात नहीं यह!"[38]

गजलीठोरी पर गगनबिहारी साहू जैसे बनिये और बेचू तिवारी जैसे भू–सामंत का कब्जा है। उन्हें उस इलाके में सक्रिय भूमिगत संगठन जंगलसेना का आश्रय प्राप्त है। इस प्रकार गजलीठोरी पर गैर आदिवासी शक्तियों का संगठन राज कर रहा है। संजीव इनसे टक्कर तो यहाँ रहकर ही ले सकता है। और रंगेनी भी सोनारा से संजीव को कहलवाती है कि वह यहाँ से न जाए। तो संजीव कहता– "बन्धु की माँ नहीं चाहती तो फिर कोई मुझे इस गाँव से नहीं हटा सकता.।"[39]

बेचू तिवारी की धमकी उसे खोखली लगती है। अकर्मण्य और भ्रष्ट हो चुकी व्यवस्था से वह संघर्ष करता है जिसमें गजलीठोरी का मुखिया मँगरू मुण्डा भी सहयोग नहीं करता। वहाँ की सारी स्थिति– ".दिखे अपने झारखण्डी भाईयों के लिए चिन्तित अवसरवादी स्थानीय छुटभैये नेता। न्यूनतम मजदूरी के लिए भड़कानेवाले भाषण देते क्षेत्रीय दलों के लीडर मिले, जिनके पास ग्रामीण–समस्याओं की बुनियादी जानकारियाँ तक नहीं। हिंसक प्रदर्शनों, तोड़–फोड़ और गिरफ्तारियाँ देकर क्षेत्रीय अखबारों में अपना चेहरा छपवाने और अपने नामोल्लेख मात्र को ही आंदोलनकारी होने का प्रयार्य माननेवाले बुद्धि के दरिद्र लोग. आदिवासी समाज की पीड़ा और संत्रास पर मोटी–मोटी शोध–पुस्तकें लिखनेवाले कुछ कथित घुमक्कड़.जिनकी चप्पलें राज्य की राजधानियों में घिसती हैं और अनुदान राज्य से झटकते रहते हैं।"[40] अतः संजीव को प्रतीत होता है कि "एक विभ्रम की स्थिति है, कोहरे में लड़ा जा रहा है एक छद्म युद्ध। युद्ध भी नहीं, स्वार्थी और स्वकेन्द्री लोगों का ढोंग.!"[41]

रंगेनी के घर में रहते हुए वहाँ आंगन में ही संजीव विद्यालय शुरू करता है। उसका पहला छात्र सोनारा है। ग्राम–भ्रमण के दौरान वह महसूस करता है कि यहाँ के आदिवासियों का जीवन संघर्षमय है। देशी–विदेशी पूँजी के गठजोड़ ने प्राकृतिक संपदा का अंधाधुँध दोहन कर आदिवासी समाज के पारंपरिक स्त्रोत को सोख लिया है और आदिवासियों को जंगल से दूर धकेलने की साजिशें की जा रही है।

वह विद्यालय के प्रचार के लिए, लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए रमना, भँडरिया, फरठिया, बानामसूरिया आदि कई गाँव घूमता है। किन्तु उनके वहाँ पहुँचने से पहले ही संजीव की "कौमनिस्ट माहटर.!. एक खतरनाक व्यक्ति.!"[42] की कुख्याति पहुँच चुकी होती है। अर्थाते बेचू तिवारी और गगन बिहारी साहू का फैलाया भ्रमजाल–अफवाहों का गाढ़ा और घना काला कोहरा चारों ओर फैल चुका है। गरीबी और संघर्ष से भरी गाँव की जिन्दगी देखकर उनमें जीवन और आशा की स्थापना उसे एक विकट चुनौती की तरह प्रतीत होती है। फिर भी वह मुण्डाओं के विश्वासों और मान्यताओं से न टकराते हुए पूरे धैर्य और सावधानी से उनसे सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करता है। भ्रष्ट व्यवस्था और सामंती शोषण से लड़नेवाले संजीव को मुण्डाओं के संरक्षक के रूप में देखनेवाले बेचू तिवारी द्वारा "तेरी औरत राँड़ हो जाएगी मास्टर और बच्चे बिन बाप के.मान जाओ मेरा कहाकृ"[43] –का यह उत्तर कि "बस, बेचू बाबू, बस। आदमी को यही दो चीजें कमजोर करती

हैं न! रिश्ते और प्राणों का भय। आपको यहाँ भी निराशा होगी। न मेरा कोई बच्चा है, न पत्नी। मुझे अपने प्राणों का मोह है, पर आप–जैसों की धमकियों का कोई डर.? ना बेचू बाबू.नहीं।"[44] दृ सुनकर तो बेचू तिवारी सहमे–से रह जाते हैं क्योंकि सामान्य जैसे दिखनेवाले शिक्षक में इतना आत्मबल और इतना दुस्साहस। अतः वह थानते हैं कि इसके लिए कुछ करना ही होगा। इस चिनगारी को समय रहते अगर न कुचला गया तो इसकी आग सारे जंगल में फैल सकती है।

संजीव, हरिया और सुगना को अपने साथ करना चाहता है क्योंकि उसे उनमें काफी संभावनाएँ नजर आती हैं। संजीव पर संदेह करनेवाले ये दोनों भी अपने बच्चों को संजीव जैसे बच्चे बहलानेवाले के पास भेजना प्रारंभ करते हैं और इस प्रकार मुँण्डाओं की सोच में परिवर्तन करने में वह आखिर सफल हो ही जाता है। क्योंकि परहा–पंचायत का प्रधान गाँव गजलीठोरी है। यह गाँव जिस पंथ पर चलेगा, अन्य गाँव भी उसी पर चलने लगेंगे।

संजीव बनासकाँठा फादर ब्रूनो को मिलने निकलता है तो रास्ते में से जंगलसेना के लोग उसे घने जंगल में अपने नेता के पास ले जाते हैं। नेता उसे धमकाते हुए कहता है– "सुन गुरूआ! हम बार–बार चेताते नहीं हैं। यह पहिली और आखिरी चेतावनी है। बाबा गउँवाँ के खिलाफ बोलना–लिखना बंद। अगले महीने तक हमारी पिछले सारे महीनों की लेवी जोड़कर मिल जाए। कौमनिस्ट होखे चाहे फोद का बाल.हमें कोई मतलब नहीं। पर हमारी बात के खिलाफ गया तो मुण्डी रेत के फेंक देंगे कोयल में।"[45]

संजीव बनासकाँठा फादर के पास पहुँचता है। वह संजीव को कहते हैं कि हमारे चारों ओर सोए हुए लोगों की भीड़ है। इनकी नींद तोड़नी ही होगी। हम तो जनजातियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करते हैं। उनकी दमित चेतना को जाग्रत करना चाहते हैं। फादर संजीव को प्रेरित करते हुए शुभकामना देते हैं कि तुम जो प्रयोग गजलीठारी में कर रहे हो, वह सफल हो।

बनासकाँठा से वापस आते समय संजीव पर भालू हमला करता है तब रुदिया उसे बचाती है। रुदिया को भी विश्वास हो जाता है कि "संजीदा में कोई जहर–माहुर नई है।.संजीदा भी हमारे जैसा आदमीन ही है।"[46] फादर ब्रूनो को भालूवाली घटना की जानकारी मिलने पर वे संजीव को खत भेजते हैं। जिसमें लिखा था–".याद रखो संजीव, यदि तुम्हें इन्द्रधनुष चाहिए तो पहले मूसलाधार बारिश भी सहनी ही होगी।"[47] उपन्यास का दूसरा खण्ड 'ठहरिये, आगे जंगल है।' –यहाँ समाप्त होता है।

संजीव का फादर से मिलना–जुलना बना रहता है। इस बीच वह गजलीठोरी में विद्यालय की प्राण प्रतिष्ठा करवाना चाहता है। रंगेनी के घर के आँगन में वह विद्यालय खड़ा करता है और मुण्डा समाज और संस्कृति को ध्यान में रखकर कोठरी की दीवार पर अंग्रेजों से लोहा लेनेवाले दो बहादुर नीलाम्बर और पीताम्बर की तस्वीर लगाता है और प्रार्थना के रूप में बिरसा की वंदना स्वरूप एक कविता का पाठ करवाता है। साहू से उसकी कहा–सुनी भी होती है। और साहू द्वारा संजीव को धमकी देने पर कि "खूब जिरहबाज हो मास्टर! कहीं एक दफे लाठी की घाटी नरेटी में पड़ गयी न, सब जिरह घुस जाएगा एन्थी में.!"[48] तो साथ में खड़ा हरमू मध्यस्थता करते हुए कह उठता है–"कोमसिन से ऐसे काहे बोलते हो साहू? तुम्हारा खेत तो नई चरता न कोमसिन?"[49] तो साहू संजीव के कारण गजलीठोरी में उभर रहे चेतना–बोध को लक्षित करके कहता है– "देखते हैं, नये मास्टर के आने से गजली की हवा ही बिगड़ने लगी है। गूँगे राड़–रेयान के भी कण्ठ फूटने लगे का रे?"[50] इस प्रकार हरमू में प्रतिरोध करने का साहस देखकर संजीव सोचता है कि मुण्डाओं के पेट पर धरे कर्ज के बोझ को अगर थोड़ा इधर–उधर कर दिया जाए तो बाकी का कार्य वे स्वयं कर लेंगे। क्योंकि साहू और बेचू तिवारी गजलीठोरी की जो सामाजिक और आर्थिक संरचना है, उसे टूटते देखना नहीं चाहते। और संजीव के कारण उनके हितों को नुकशान हो सकता है। हरमू और सुगना में संजीव को यह उम्मीद दिखती है कि साहूकारी–पाश को तोड़ने में ये दो मुण्डा हथियार बन सकते हैं अतः एक दिन हरमू संजीव से बात करते हुए कहता है कि 'हम बिरसाइत है' तो उसे उत्तेजित करने के लिए संजीव कहता है–"जिस दिन तुम्हारे भीतर से गगनबिहारी और बेचू तिवारी जैसे सादानों का डर निकल जाएगा, उसी दिन तुम सच्चे बिरसाइत हो सकोगे।"[50] –सुनकर हरमू और सुगना भीतर से तिलमिला उठते हैं। संजीव जानता है कि मुण्डा कर्जा और बेचू तिवारी की शक्ति से दबे हैं। वह हरमू और सुगना को इनके विरुद्ध खड़ा करता है। संजीव महाजनों के कर्ज को दूर करने के लिए को–ओपरेटिव सोसायटी लाने की बात करता है। जिसमें हरमू और सुगना चुपचाप सहयोग देते हैं। तो दूसरी ओर सरहुल के पर्व के समय रुदिया के गुम होने पर साहू संजीव पर आरोप लगाते हुए कहता है–".अब रुदिया मिलेगी लातेहार.नहीं तो चन्दवा–टोरी के किसी लाइन होटल में। उधर रण्डीपाड़ा चलता है। किसी होटल में रुदिया को बेच आया साला कौमनिस्टवा.।"[51] –सुनकर सुगना, साहू पर उबल पड़ता है–"जब तक कोमनिस से पूछ नई लेते, एक वचन मत बोलना अब, नई तो घेंटी धर लेंगे।"[52] सहमू–सुगना के खुलते कण्ठों से पहान को भी हिंमत बँधती है और वह भी साहू से उखड़ी बोली बोलता है। संजीव के वहाँ आने पर पहान उससे पूछने ही वाला था कि रुदिया के घर लौटने की जानकारी मिलने पर उसकी आँखों में साहू के प्रति घृणा की चिनगारी उमड़ती है। मुण्डाओं के बदले तेवर देख साहू भयभीत हो उठता है।

अनंत चौहान के सहयोग से संजीव गजलीठोरी में को–ओपरेटिव सोसायटी स्थापित करने में सफल हो जाता है। और सुगना मुण्डा तथा मुलकी बुढ़िया को उसी दिन साहू के कर्ज से मुक्ति दिलवायी जाती है। करमा के त्योहार तक तो विद्यालय भी पूरा होता नजर आता है। संजीव की शिकायतें रंग लाने लगती हैं। गजलीठोरी के 'पायलेट प्रोजेक्ट' की अनियमितताओं की जाँच के लिए जाँच–समिति का गठन कर दिया जाता है। 'साख सहयोग समिति' की स्थापना भी हो चुकी है। संजीव मुण्डाओं को जाग्रत करने में सफल होता है। अतः सोचता है कि अगर उसका तबादला भी हो जायेगा तो शिक्षा के प्रति जागरूक मुण्डा नये शिक्षक को भी सुचारु रूप से विद्यालय चलाने को विवश कर देंगे। जो मुण्डा उनके साथ नहीं है, संजीव को विश्वास है कि वे भी कभी–न–कभी उनके साथ हो जायेंगे। साहू द्वारा संजीव से यह कहने पर कि "कितने दिन रहोगे यहाँ मास्टर? कभी तो यहाँ से जाओगे ही। गये माघ दिन उन्नतीस बाकी.फिर यहाँ सबकुछ वैसा ही हो जाएगा, जैसा तुम्हारे आने से पहले था।"[53] तो संजीव ठीक ही कहता है–"ये ही तुम्हारी भूल है साहू। आने वाले पंचायत चुनाव में मुण्डा अपनी तकदीर आप लिखेंगे, देख लेना तुम! फिर वैसा नहीं हो पाएगा जैसा तुम चाहते हो। सुनो साहू.व्यापारी हो तुम! व्यापारी तेल की धार देखता है। अभी समय है.चेतो। बेचू तिवारी अब एक डूबती नाव है। बच सको तो कूदकर बच लो।"[54] तीसरा खण्ड यहाँ समाप्त होता है।

हरमू को सोसायटी से एक हजार रुपये का कर्ज मिलता है तो संजीव उससे किराने की दुकान खुलवाकर साहू को भीतरी मार मारता है। साहू और बेचू तिवारी संजीव को अंतिम बार धमकाने रात में आते हैं। किन्तु संजीव अपनी बातों पर डटा रहता है। उपन्यास का चौथा खण्ड यहाँ समाप्त होता है।

अंतिम खण्ड 'यह अंत नहीं' संजीव की हत्या के साथ उपन्यास समाप्त होता है।

इस उपन्यास का अंत अस्वाभाविक और जल्दी में निपटा दिया प्रतीत होता है। 'शुरू करने से पहले' में उपन्यासकार 'पठार पर कोहरा' के उद्देश्य की ओर इंगित करते हुए लिखते हैं– "भारतीय बुद्धिजीवी समाज में जिन लेखकों ने आदिवासी जनजीवन पर

लिखा है उनमें से अधिकांश ने हर एक गैर आदिवासी को खलनायक के रूप में ही चित्रित करने की रूढि का अनुगमन किया है। इस रूढ़िवादी लेखन ने आदिवासी क्षेत्रों के बाहर हर गैर–आदिवासी को दीकू (डाकूधदिक्कत करने वाला बाहरी घुसपैठिया) के रूप में स्थापित कर एकरस, एकतरफा और एकांगी सोच को विकसित किया है जब कि नये परिपेक्ष्य में इस संबंध को पुनःपरिभाषित करने तथा आदिवासी–गैर–आदिवासी के बीच की आदिम खाई को पाटने की फौरन जरूरत है।"[55] संजीव सान्याल के द्वारा उपन्यासकार ने आदिवासी–गैर आदिवासी के बीच की इस खाई को पाटने की कोशिश की है। फिर भी यह उपन्यास भी नागार्जुन के 'दुखमोचन' की तरह आदर्शवादी बनकर रह गया है। संजीव की हत्या के पहले साहू, बेचू तिवारी और जंगलसेना का संजीव के साथ संघर्ष का चित्रण आवश्यक था, जो लेखक नहीं कर सके हैं। साहू या बेचू तिवारी से उनका संघर्ष रुदिया के भागने की घटना तक सीमित रहता है। विद्यालय प्रारंभ करने या को–ओपरेटिव सोसायटी के शुरू होने मात्र से या किराने की दुकान के प्रारंभ मात्र से या लेवी न देने मात्र से साहू या बेचू तिवारी जैसे शोषक टूटन महसूस करने लग जायेंगे, ऐसा माना नहीं जा सकता। इसलिए उपन्यास के अंत में संजीव की गर्दन रेत कर हत्या करने का चित्रण बहुत ही अस्वाभाविक ही नहीं, कृत्रिम लगता है। वैसे उपन्यासकार संजीव की हत्या के पूरे कारण हमारे सामने धरते हैं। जैसे, गजलीठोरी में रात को रुकने की जगह के पूछने पर साहू का संजीव से कथन कि" तुम्हें अपने घर टिका लिया और वे लोग खिसिया गये तो फिर इस जंगल में हमें कोई नहीं बचानेवाला। दिन–दहाड़े गर्दन रेतकर फेंग देंगे सेना वाले।"[56] और संजीव के यह पूछने पर कि यदि मैं रात में उनके हाथ पड़ गया तो के उत्तर में साहू कहता है– "तुम्हारा क्या है जी! तुम ठहरे दीकू! एक बार चेताकर तुम्हें छोड़ देंगे लोग, और क्या?"[57] साहू एक बार संजीव से कहता है– "देखो मास्टर जी, गजली में रहना है तो सीधे–सीधे ही रहना।.यहाँ कोई जागरन–फागरन नहीं चलेगा। यहाँ तो जंगल का ही नियम चलता है। हाथ–गोड़ समेटकर रहोगे यहाँ तो कोई खतरा नहीं होगा।"[58] बेचू तिवारी भी संजीव से कहते हैं– "मार्ग में आरखाँड़ देखा होगा.आग पर चलने का खेल मास्टर जी?.यह वनांचल भी एक आरखाँड़ ही है और अपना गजलीठोरी भी.।.जो इस आरखाँड़ में चलने का मंत्र जान लेता है, उसे कुछ नहीं होता। सुरक्षित पार उतर जाता है जंगल से। आवश्यक समझो तो साहू से यहाँ टिकने का मंत्र तुम भी ले लो।"[59]

संजीव द्वारा बच्चों को पढ़ाने को लेकर बेचू तिवारी से जो बहस होती है उसमें संजीव के कड़े तेवर देख बेचू तिवारी उसे स्पष्ट धमकी देता है–"तेरी औरत राँड़ हो जाएगी मास्टर और बच्चे बिन बाप के.मान जाओ मेरा कहा.।"[60] बनासकाँठा जाते समय जंगलसेना का नेता संजीव की लेवी न देने की बात पर कहता है–"सुन गुरुआ! हम बार–बार चेताते नहीं हैं। यह पहिली और आखिरी चेतावनी है। बाबा गँउवाँ के खिलाफ बोलना–लिखना बंद। अगले महीने तक हमारी पिछले सारे महीनों की लेवी जोड़कर मिल जाए। कौमनिस्ट होखे चाहे फोदे का बाल.हमें कोई मतलब नहीं। पर हमारी बात के खिलाफ गया तो मुण्डी रेत के फेंक देंगे कोयल में।"[61] विद्यालय के मकान बनाने का ठेके को लेकर संजीव द्वारा बहस करने पर साहू कहता है– "खूब जिरहबाज हो मास्टर! कहीं एक दफे लाठी की घाटी नरेटी में पड़ गयी न, सब जिरह घुस जाएगा एन्थी में.!"[62] – ऐसे कथनों के मद्देनजर ही लेखक ने संजीव की हत्या का वर्णन किया है।

निष्कर्ष–इस उपन्यास को लेखक ने पाँच खण्डों में विभाजित किया है। खण्डों के शीर्षक सार्थक हैं। संजीव सान्याल के द्वारा उपन्यासकार ने आदिवासी–गैर आदिवासी के बीच की इस खाई को पाटने की कोशिश की है। फिर भी यह उपन्यास भी नागार्जुन के 'दुखमोचन' की तरह आदर्शवादी बनकर रह गया है। पहली मुलाकात में संजीव हरमू द्वारा साहू का प्रतिवाद करने पर सोचता है–".एक बार यदि मुण्डाओं के पेट पर धरे इस बोझ को थोड़ा–सा हिला भर दिया जाए तो शेष कार्य मुण्डा स्वयं कर लेगें। उछाल फेंकेंगे अपने ऊपर लदी इस शिला को।"[61] –उपन्यासकार के दिवास्वप्न हैं। इस रूप में प्रस्तुत उपन्यास लेखक की आशावादी नहीं, निराशावादी विचारधारा को चित्रित करता है। उपन्यास के अंत में संजीव की गर्दन रेत कर हत्या करने का चित्रण बहुत ही अस्वाभाविक ही नहीं, कृत्रिम लगता है। इस प्रकार उपन्यास का अंत अस्वाभाविक व जल्दी में निपटा दिया हुआ प्रतीत होता है। संजीव की हत्या मुण्डाओं के अधिकार–बोध की हत्या है। होरी–बलचनमा–मटरू की जो विकसित परंपरा हिंदी में मिलती है वह नीलकांत के 'बँधुआ मजदूर' से उल्टी बहने लगी प्रतीत होती है। क्योंकि वहाँ रामदास को जेल हो जाती है तो इस उपन्यास में संजीव की हत्या करवा दी जाती है।

संदर्भ

1. राकेशकुमार सिंह, पठार पर कोहरा, प्रथम संस्करण, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2003 पृ. 186।
2. वही पृ. 15।
3. वही पृ 54।
4. वही पृ 56।
5. वही पृ 11।
6. वही पृ 19।
7. वही।
8. वही पृ 59।
9. वही।
10. वही पृ 70।
11. वही पृ 71।
12. वही पृ 73।
13. वही।
14. वही पृ 74।
15. वही पृ 75।
16. वही पृ 33।
17. वही पृ 53।
18. वही पृ 57।
19. वही।
20. वही पृ 94।
21. वही पृ. 96।
22. वही पृ 97।
23. वही पृ 105।
24. वही पृ. 108।
25. वही पृ. 112।
26. वही।
27. वही पृ. 114।
28. वही।
29. वही पृ. 115।
30. वही पृ. 116।
31. वही पृ 118।
32. वही पृ. 119।
33. वही पृ. 123।
34. वही पृ. 124।
35. वही पृ. 125।
36. वही।
37. वही पृ. 126।
38. वही।

39. वही. पृ. 132 |
40. वही पृ. 137 |
41. वही |
42. वही पृ. 138 |
43. वही पृ. 145 |
44. वही |
45. वही पृ. 160 |
46. वही पृ. 184.185 |
47. वही पृ. 186 |
48. वही पृ. 190 |
49. वही |
50. वही |
51. वही पृ. 194 |
52. वही पृ. 207 |
53. वही |
54. वही पृ. 226 |
55. वही पृ. 226–227 |
56. वही पृ. 9 |
57. वही पृ. 91 |
58. वही |
59. वही पृ. 112 |
60. वही पृ. 114 |
61. वही पृ. 145 |
62. वही पृ. 160 |
63. वही पृ. 190 |
64. वही पृ. 191 |